बुद्धवर्ष २५४५, श्रावण पूर्णिमा, ४ अगस्त, २००१ वर्ष ३१ अंक २

धम्मवाणी

सिक्खासाजीवसम्पन्नो, इन्द्रियेसु सुसंवुतो।
नमस्समानो सम्बुद्धं, विहासि अपराजितो॥

थेरगाथा- ५१३

बुद्ध की शिक्षा और शुद्ध आजीविका से युक्त होकर, मैं इंद्रियसंयत और अजेय हुआ और यों बुद्ध को नमस्कार करता हुआ विहार करने लगा।

विपश्यना यात्रा २००१

(क्रमशः)...

दिनांक २५ फरवरी २००१, रविवार

वैशाली

दैनिक कार्य-क्रमोंके पश्चात प्रातःकाल सभी यात्रियों ने बस द्वारा वैशाली के लिए प्रस्थान किया। हम पटना पार कर हाजीपुर पहुँचे। विहार के जिला मुजफ्फरपुर, गांव 'बसाढ़' प्राचीन वैशाली का स्थान कहा जाता है। बसाढ़ याने वैशाली के पास मुजफ्फरपुर से प्रायः ४ किलोमीटर उत्तर, वर्तमान कोल्हुआ में आज भी अशोक-स्तंभ खड़ा है। वैशाली में हम ३-३० बजे पहुँचे थे। यहां दो प्रमुख स्थानों को देख पाये।

१- एक वह स्थान जहाँ लिच्छवियों ने भगवान के महापरिनिर्वाण के पश्चात धातु-अवशेष के आठवें भाग का धातु-निधान कर उस पर स्तूप बनाया था। अब ये धातु-अवशेष यहां से निकाल कर पटना म्यूजियम में रखे गये हैं।

२- दूसरा स्थान जहां अशोक स्तंभ है, जो इससे कुछ ही दूरी पर है तथा इस स्थान के महत्व को उजागर करता है। इन्हीं दो स्थानों का निरीक्षण कर हम आगे की ओर बढ़ गये।

वैशाली का महत्व

वैशाली लिच्छवियों की राजधानी थी। भगवान यहां बोधिप्राप्ति के बाद पाँचवे वर्ष में आये थे। पाँचवाँ वर्षावास यहीं किया था। यह ७७०७ राजाओं द्वारा स्थापित गणतांत्रिक राज्य था। धन-धान्य से परिपूर्ण था वैशाली नगर। **यह संसार का प्रथम गणतांत्रिक राज्य था।** नगर तीन प्राकारोंसे आवेष्टित था। एक से दूसरे प्राचीर के बीच एक गव्यूति (लगभग दो-ढ़ाई किलोमीटर) का अंतर था। दीवालों में तीन स्थानों पर महाद्वार थे। उन पर गुम्बज बने थे। उनमें प्रहरी रहते थे। **लिच्छवी** को ही **वज्जी** भी कहते हैं। जब गौतम सिद्धार्थ का जन्म हुआ तब वैशाली भी श्रावस्ती तथा राजगृह के समान ही समृद्ध राज्य था।

१- एक बार वैशाली में अनावृष्टि के कारण भयानक दुर्भिक्ष पड़ा। उस समय भगवान राजगृह में थे। बुद्ध को आमंत्रित करने का निश्चय किया गया। लिच्छवी सेना का प्रधान सेनापति महालि सेना का कुशलप्रशिक्षक और राजा बिंबिसार का मित्र भी था। भगवान को सादर निवेदन करबुलाने के लिए महालि को ही भेजा गया।

२- भगवान अनेक बार वैशाली आये। संख्या निश्चित करना संभव नहीं।

३- महाप्रजापती गौतमी ५०० शाक्य महिलाओं सहित आनन्द की सहायता से यहीं पर प्रव्रजित होने में सफल हुई। यहीं भिक्षुणी संघ की स्थापना भी हुई।

४- अजातशत्रु वैशाली पर आक्रमण करना चाहता था। अमात्य वर्षकार को अजातशत्रु ने भगवान के पास भेजा कि वह भगवान की शुभ कामना प्राप्त करे। उस समय भगवान राजगृह के गृध्रकूट पर्वत पर विहार कर रहे थे। उन्होंने वर्षकार को सीधे उत्तर न दे कर, आनंद से जो कि पीछे खड़े हो कर भगवान को पंखा झल रहे थे पूछा, "आनन्द! क्या वैशाली के लिच्छवी – १- सन्निपात-बहुल हैं (राज्य परिषद में बार-बार एक त्र होते रहते हैं?) २- एकता-बद्ध रहते हैं? ३- पहले के राजाओं द्वारा बनाये संविधान का उल्लंघन नहीं करते? ४- बड़े-बूढ़ों का आदर-सत्कार, पूजन-सम्मान करते हैं? उनके अनुभव का लाभ लेते है? ५- क्या कुल-स्त्रियों, कुल-कुमारियों को छीनकर जबर्दस्ती नहीं बसाते? ६- राज्य-चैत्य (देव-स्थानों) का सम्मान करते हैं? ७- क्या अरहंतों (संतों) की भलीभांति धर्मानुसार रक्षा करते हैं? तथा नहीं आये संतों को आमंत्रित करते हैं? जो आये हुए हैं उनको राज्य में सुख-पूर्वक विहार कर सकने की व्यवस्था करते हैं? – आनन्द! जब तक वज्जी इन सात अपरिहाणीय-धर्मों (अ-पतन के नियम) का पालन करते रहेंगे तब तक वज्जियों की श्रीवृद्धि ही समझना, हानि नहीं।"

भगवान ने वैशाली के **सारन्दद-चैत्य** में विहार करते समय उनको ये सात अपरिहाणीय-धर्म देशित किये थे। भगवान द्वारा बताये गए इन नियमों पर जब तक वज्जी-गणराज्य के संसद सदस्य चलते रहे तब तक उनकी हानि नहीं हुई।

अजातशत्रु ने अमात्य वर्षकार से मंत्रणा की और नाटकीय ढंग से उसे देश से निकाल दिया। वैशाली जाकर वर्षकार ने राजकीय शरण ली और धीरे-धीरे उनमें फूट डाल दी। वर्षकार की सांके तमिलने पर अजातशत्रु ने वैशाली पर चढ़ाई की और उसको पराजित कर

अपने अधीन कर लिया। वज्जी जब तक भगवान बुद्ध के बताये अनुसार राज-काजकरतेरहे तब तक उनकीहानि नहीं हुई।

५- कुसीनारा (कुशीनगर) की ओर अंतिम यात्रा करने से पूर्व भगवान वैशाली के चापाल चैत्य में ठहरे थे। भगवान ने वैशाली के सौन्दर्य का वर्णन किया और **आनंद के समक्ष तीन माह बाद महापरिनिर्वाण लेने की घोषणा करके पश्चिम की ओर चल पड़े।**

६- वैशाली में चापाल चैत्य, उदेन चैत्य, गौतमक चैत्य, सत्तम्बल चैत्य, बहुपुत्तक चैत्य, सारन्दद चैत्य प्रसिद्ध थे। भगवान के जीवन कालमें विद्यमान थे। भगवान प्राय: **कूटागारशाला** तथा कभी इन चैत्यों में विहार किया करते थे।

७- वैशाली निर्ग्रन्थों का शक्ति-केन्द्र था। भगवान महावीर ने स्वयं अपने ४२ वर्षावासों में १२ वर्षावास वैशाली में व्यतीत किया था।

८- अम्बपाली के आम्रवन में भगवान ने भिक्षु-संघ सहित विहार किया था। अम्बपाली गणिका ने भिक्षुसंघ सहित भगवान को भोजन पर आमंत्रित किया था। भगवान ने मौन-स्वीकृति दी थी। इसके बाद वैशाली के लिच्छवियों ने भगवान को आमन्त्रित किया परंतु भगवान ने उनको यह कह कर टाल दिया था –"लिच्छवियो! कल का भोजन तो स्वीकार कर लिया है, अम्बपाली-गणिका का भोजन।" भगवान के लिए राजा और गणिका में भेद नहीं था। जिसने पहले आमंत्रित किया उसका भोजन स्वीकार कर लिया। चाहे वह गणिका ही क्यों न हो।

९- वैशाली के समीप महावन था। इसीमें गोसिंग सालवन भी था। भगवान बहुधा वहां संघ सहित ध्यान करने जाते थे।

१०- वैशाली में भगवान ने अनेक महत्वपूर्ण उपदेश दिए थे।

११- भगवान के महापरिनिर्वाण के चार माह बाद प्रथम संगीति राजगृह में दक्षिणागिरि के सत्तपण्णीगुहा में सम्पन्न हुई थी और **दूसरी संगीति** वैशाली में एक सौ वर्ष पश्चात हुई।

धम्मलिच्छवी विपश्यना केंद्र

धूल भरे मार्ग से चलते हुए हम सायं ५:३० बजे **धम्मलिच्छवी** विपश्यना केंद्र पहुँचे। यह वैशाली से ३० किलोमीटर और नेशनल हाई-वे (पटना-मुजफ्फरपुर) से केवलदो किलोमीटर और मुजफ्फरपुर से १२ किलोमीटर की दूरी पर है। **लदौरा** गाँव में स्थित यह केंद्र हरे-भरे कृषि-भूमि के मध्य अत्यंत शांत स्थान पर है। यह क्षेत्र 'लीची' फल के लिए प्रसिद्ध है। केंद्र ८.५ एकड़ भूमि पर स्थित है। अभी ४० पुरुष तथा १८ महिलाओं के ध्यान योग्य व्यवस्था है। थोड़ी देर ध्यान करनेके बाद हम सभी धर्म यात्री मुजफ्फरपुर वापिस चले आये जहाँ हमारी ट्रेन खड़ी थी। पूज्य गुरुजी का सार्वजनिक धर्म-प्रवचन मुजफ्फरपुर नगर में हुआ। मुजफ्फरपुर से हम गोंडा के लिए रवाना हुए, जहाँ से श्रावस्ती की यात्रा करनी थी।

धम्मउपवन, बाराचकिया – एक छोटा विपश्यना केंद्र है। यह केंद्र 'मुजफ्फरपुर-रक्सौल राष्ट्रीय महामार्ग-२९' के किनारे स्थित है। एक दिवसीय शिविर लगा करता है। यहां पर गुरुदेव ने सर्वप्रथम केंद्रेतर शिविर सन् १९७० में लगाया था। इस कारण विपश्यना के इतिहास में इसे स्मरण किया जायेगा।

दिनांक २६ फरवरी २००१, सोमवार

श्रावस्ती

विपश्यना-यात्री आज प्रातः गोंडा स्टेशन पर पहुँचे। यहां से बस द्वारा श्रावस्ती के लिए रवाना हुए। दोपहर बाद देर से पहुँचे, जहां श्रावस्ती के सर्किटहाऊस में बौद्ध महिला समिति द्वारा भोजन की व्यवस्था की गई थी। भोजनोपरांत पूज्य गुरुजी एवं माता जी के संग हम लोगों ने **धम्मसुवत्थि विपश्यना केंद्र** की भूमि पर बने पंडाल में ध्यान किया। पूज्य गुरुजी ने अपने प्रवचन में साधक-साधिकाओं को चरण छूने की परंपरा को अनावश्यक बताते हुए आशीर्वाद द्वारा तरने की प्रवृति से दूर रहने को कहा। ध्यान करते हुए अपने स्थान से ही प्रणाम करना पर्याप्त है। हमारा तारक कोई अन्य नहीं, हम ही हैं – आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला।

श्रावस्ती का महत्त्व

श्रावस्ती, कोशल की राजधानी, उन दिनों के भारत की सबसे घनी आबादी वाली नगरी थी। काशी-कोसल की प्रमुख नगरी थी। उस समय के छः प्रमुख महानगरों में इसकी गिनती होती थी। यह अचिरवती (वर्तमान की राप्ती) नदी के तट पर स्थित है।

१- अनाथपिण्डिक (सुदत्त) ने जेत राजकुमार के जेतवन उद्यान की भूमि को सोने के सिक्के (कार्षापण) बिछा कर खरीदा था। उसके लिए भगवान की शिक्षा की तुलना में इन कार्षापणों का अधिक महत्त्व नहीं था। जेत राजकुमार ने भी इसके महत्व को समझा तथा विहार के प्रवेश द्वार वाला स्थान जो अभी सोने के सिक्के बिछाने से बचा हुआ था, उतनी भूमि उसने अपनी ओर से दान दिया। श्रद्धालु अनाथपिण्डिक ने यहां उसके नाम से 'जेतवन विहार' बनवा कर भगवान सहित भिक्षु संघ को दान किया। अनाथपिण्डिक भगवान का गृहस्थ उपासक था। धर्मिष्ठ था। वह भिक्षु संघ को सदैव दान देते रहा। परंतु अन्य मतावलंबियों को भी उसी प्रकार मुक्त-हस्त से दान दिया करता था। ऐसी ही शिक्षा थी तथागत की।

२- आज जेतवन खण्डहर है। इसकी शिनाख्त की जा चुकी है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है **गंधकुटी**। भगवान जिस कुटी में निवास किया करते थे उसे 'मूलगंधकुटी' के नाम से जाना जाता है। भगवान ने जेतवन में १९, पूर्वाराम में ६, इस प्रकार कुल २५ वर्षावास श्रावस्ती में ही किये। उनके विहार का यह प्रमुख केन्द्र रहा।

३- गंधकुटी के पास ही **आनंदकुटी** भी है। अद्भुत याददास्त के धनी आनंद भगवान की सेवा में छाया की भांति लगे रहे।

४- **आनन्द बोधिवृक्ष** भी यहीं है, जिसे आनंद ने भगवान के जीवनकाल में ही बोधगया से मूलबोधिवृक्ष की टहनी मंगवा कर लगवाया था। भगवान की अनुपस्थिति में इसके पास ध्यान करने हेतु यह लगवाया था। भगवान को ध्यान के लिए किसी मंदिर या मूर्ति की स्थापना स्वीकार्य नहीं थी।

५- संघ में फूट डाल कर **देवदत्त** यहां से ५०० नये भिक्षुओं को बहका कर ले गया था। राजगृह के 'गयाशीश' पर विहार करते समय सारिपुत्र और मोद्गल्यायन उन्हें वापिस ले आए। देवदत्त ने भगवान को मरवाने के लिए भी अनेक प्रयत्न किये, पर सफल नहीं हुआ। बाद में उसे अपनी करनी पर बहुत पश्चाताप हुआ। वह भगवान से क्षमायाचना के लिए श्रावस्ती आया। परंतु वह जेतवन के सामने वंदासागर तालाब में हाथ मुँह धोने के लिए डोली पर से उतरा और वहीं काल कलवित हो गया।

इसी तरह यहीं भगवान पर कामभोग का झूठा आरोप लगाने वाली **चिञ्चा** माणविका जेतवन विहार से बाहर निकलते ही मृत्यु को प्राप्त हुई।

६- जेतवन से कुछ दूरी पर 'अंगुलिमाल स्तूप' (पक्कीकुटी) है। ९९९ मनुष्यों की हत्या कर चुका अंगुलिमाल यहीं भगवान की कल्याणी विद्या विपश्यना का अभ्यास कर मुक्त हुआ, अरहंत हुआ। वह इसी क्षेत्र का कुख्यात डाकू था। विपश्यना से जीवन ही बदल गया। कोई चमत्कार नहीं था। आज भी जेलों के अनेक जघन्य हत्यारे कैदी इस विद्या का अभ्यास कर बदल रहे हैं। उस अरहंत की स्मृति में अंगुलीमाल स्तूप का खण्डहर भी अपनी कहानी कह रहा है। पास ही अनाथपिण्डिक स्तूप (कच्चीकुटी) भी है। इसी के पास पुण्यशाला भी है।

७- यहीं पर भगवान ने मंगलसुत्त तथा करणीयमेत्त सुत्त की देशना की। उपालि ने यहीं पर सर्वप्रथम विनय का पाठ किया, जिसमें भिक्षुओं के नियम बताये गये हैं। चारों निकायों में से ८७१ सुत्तों की देशना भगवान ने यहीं पर की।

८- भगवान की प्रसिद्ध उपासिका सुप्पवासा भी यहीं की थी।

९- महाप्रतापी बंधुल भी आपसी रंजिश से खिन्न होकर मल्लों के कुशीनारा (कुशीनगर) से श्रावस्ती चला आया था। उसके मित्र कोशल-राज प्रसेनजित ने उसे कौशल की सेना का सेनापति बना दिया था।

१०- यहीं की प्रसिद्ध उपासिका थी **माता विशाखा** जिसने जेतवन के पूर्व में एक ध्यान केन्द्र की स्थापना कर भगवान सहित भिक्षुसंघ को दान में दिया था। इसे पूर्वाराम कहते थे। आज उस पूर्वाराम का खण्डहर धरती में दबा हुआ है। उस पर एक गांव बसा हुआ है। भगवान के समय में भिक्षुओं की अपेक्षा गृहस्थ उपासक उपासिकाओं की संख्या अधिक थी। भगवान के अनुयायियों में श्रावस्ती की कुल आबादी में से दो तिहाई संख्या गृहस्थ उपासक उपासिकाओं की थी। भगवान की शिक्षा केवल भिक्षुओं के लिए नहीं बल्कि गृहस्थों के लिए भी उतनी ही लाभकारी थी।

११- भगवान के समय में भी जाति-पांति का भेदभाव था। स्वयं प्रसेनजित क्षत्रिय थे। कपिवस्तु उनके अधीन था। परंतु कपिलवस्तु के क्षत्रिय अपने आप को उच्चकोटि के इक्ष्वाकु-कुलका क्षत्रिय मानते थे। अपने आपको भगवान के कुल में शामिल करने के लिए ही तो कोशल के राजा प्रसेनजित ने शाक्य-कुल से शाक्य-कुमारी मांगा था। परंतु शाक्यों ने अपनी जाति की श्रेष्ठता को कायम रखने के लिए नीचे कुल की राजा महानाम की दासी-पुत्री वासभखत्तिया को शुद्ध शाक्य-रक्त की कुमारी बता कर भेज दिया। वासभखत्तिया राजा प्रसेनजित की प्राण-वल्लभा बन गई। पटरानी बना दी गई। पुत्रवती हुई। उसके पुत्र विडूडभ को युवराज बना दिया। कुछ बड़ा होने पर विडूडभ अपने ननिहाल जाने की जिद्द करने लगा। मां टालती रही। परंतु एक दिन वह हठ करके चला गया। वहां उसके दासी पुत्र होने का रहस्य प्रकट हुआ। राजा प्रसेनजित ने वासभखत्तिया को तथा विडूडभ को महारानी तथा युवराज के पद से अपदस्थ कर उन्हें दासी व दास बना दिया। भगवान द्वारा प्रसेनजित को समझाने पर उन्हें वह पद पुनः प्राप्त हुआ। परंतु विडूडभ वैर साधे रहा। जब वह राजा बना तो उसने शाक्यकुल के क्षत्रियों का संहार कर उनका सर्वनाश कर दिया। यह जाति का मिथ्या अहं शाक्यकुल के विनाश का कारण बना। भगवान तथागत जन्मगत वर्ण-व्यवस्था के विरुद्ध थे। ऐसी वर्णव्यवस्था समाज के लिए अकल्याणकारी थी। उनके लिए कर्म से ही कोई ब्राह्मण या क्षत्रिय बनता, जन्म से नहीं। जो सदाचारी है मन को वश में कर चित्त को नितांत निर्मल कर लेता है; वही ब्राह्मण है। चाहे किसी जाति, वर्ण, बोली-भाषा का क्यों न हो।

श्रावस्ती में जेतवन का खण्डहर आज भी ध्यानियों के लिए प्रेरणादायी स्रोत है। सभी धर्म-यात्रियों ने पूज्य गुरुजी एवं माता जी के सान्निध्य में मूलगंधकुटी के सामने के प्रांगण में सायं-काल ६ से ७ बजे तक ध्यान किया। जो कुछ भी अनुभव हुआ वह अद्वितीय था। आज अढाई हजार वर्षों के पश्चात भी यह स्थान धर्म की पावन तरंगों से आप्लावित है। आचार्य एवं शिष्यगणों का यह ध्यान एक ऐतिहासिक घटना है। दुर्लभ घटना।

इसी का ध्यान रख कर पूज्य गुरुजी ने यहां पर एक केन्द्र की स्थापना के लिए साधकों को प्रेरित किया था। छः एकड़ भूमि क्रय की जा चुकी है, जिसका नाम पूज्य गुरुजी ने **धम्मसुवत्थी** विपश्यना केंद्र दिया है। सुनिश्चित है कि यहां से धर्म की कल्याणकारिणी गंगा पुनः प्रवाहित हो कर विपुल लोक कल्याण करेगी।

अब हम लोग बस द्वारा यहां से पुनः गोंडा स्टेशन पहुचे। रात्रि ११ बजे हमारी गाड़ी गोरखपुर के लिए रवाना हुई।

क्रमशः....

मंगल मृत्यु

जयसिंगपुर (कोल्हापुर) के सहायक आचार्य श्री राजेंद्र बरडिया की धर्मपत्नी लिखती हैं "हम दोनों ने पूज्य गुरुजी के सान्निध्य में ७ वें दिन का प्रवचन सुना तब से ही उनमें अतीव श्रद्धा जागी और शीघ्र ही शिविर में सम्मिलित हो गए। पहले ही शिविर में उन्हें बहुत कुछ प्राप्त हुआ। जीवन ही बदल गया। चेहरे का तेज बढ़ता गया कि हर कोई उनके प्रति आकर्षित हो जाता। उनका जीवन धर्ममय हो गया। हर क्षण समता, वाणी में गंभीरता, मैत्री, करुणा, प्यार और मुदिता जीवन के हर क्षण में, हरएक के प्रति छलकती रहती। क्रोध, मत्सर, द्वेष कहीं दिखाई नहीं देता था। जब भी समय मिलता, आनापान और विपश्यना ही करते रहते। जो भी मिलता, चाहे वह कामगार हो, व्यापारी, सगे-संबंधी या अन्य कोई, सब को विपश्यना के शिविर के लिए उत्साहित व प्रेरित करते।

बचपन से अच्छे संस्कारों के धनी होने के कारण मां-बाप व दादी की बहुत सेवा करते रहे और उन सब को धर्म में पुष्ट करने में लगे रहे। जब भी शिविर में जाते, उन्हें भी साथ ले जाते या उनकी अच्छी देखभाल की व्यवस्था करके जाते।

गुरुजी द्वारा स. आ. नियुक्त होने पर बड़ी लगन से शिविर संचालन का कार्य किया। हर एक साधक को सही धर्म समझ में आए, इसके लिए सतत प्रयत्नशील रहे। लोग भी (पूज्य गुरुजी की मैत्रीपूर्ण तरंगों के कारण) उनसे बहुत प्रभावित और संतुष्ट रहते।

मृत्यु के १५-२० दिन पूर्व से श्वास की तकलीफ और ज्वर के कारण थकावट व कमजोरी के कारण घर में ही रहने लगे थे। लेकिन दिन भर आनापान करना, सुबह-शाम चांटिंग सुनना, गुरुजी के कई प्रकार के प्रवचन [अनत्तलक्खणसुत्त, वेदनासुत्त, आनापानसतिसुत्त आदि] सुनते रहते। रात को मैं पूज्य गुरुजी की पुस्तक 'तिपिटक में सम्यक संबुद्ध' पढ़ कर सुनाती। बड़ी तन्मयता से सुनते और साधुकार करते रहते। हास्पिटल जाने के दो दिन पूर्व मैंने पूछ लिया –"बहुत कमजोर लगते हो, क्या ध्यान करते समय आपको संवेदना मिलती है?" तुरंत जवाब दिया, 'अरे, २ मिनट में ही मेरा सब अंग खुल जाता है। बड़ी समता और एकाग्रता रहती है।'

अस्पताल में अंत तक इतनी समता थी कि मुँह से कभी ओह, हाय आदि शब्द नहीं निकले। कोई तड़फ नहीं, कोई शिकायत नहीं। सदैव शांत और सहजभाव में रहे। अंतिम क्षण मैंने माथे पर हाथ रखा तब सारे

शरीर में सिहरन दौड़ गयी। शांतिपूर्वक ध्यानमग्न हो गए और धीरे-धीरे अंतिम सांस छोड़ दी। अंतिम क्षण की समता और शांतिमय चेहरे का तेज देखने योग्य था।"

** पालनपुर की विपश्यना समिति ने सूचना भेजी है कि वहां के श्री नटुभाई देसाई मुंबई की नेमानीवाडी में लगे अपने पहले शिविर से ही नियमित साधनारत रहे। उनका जीवन बहुत सात्विक हो गया। उन्होंने जीतेजी किसी को कोई कष्ट नहीं पहुँचाया और न ही मृत्यु के समय। मृत्युपर्यंत उनकी समता प्रेरणाजनक रही। मृत्यु के १२ घंटे बाद भी चेहरे की शांति और कमनीयता दर्शनीय थी। शरीर से कोई दुर्गंध नहीं।"

** इगतपुरी के संजय थोरात लिखते हैं, "मेरे पिताजी श्री सुरेशराव थोरात ने धम्मगिरि पर दो शिविर किये। पूरा परिवार विपश्यी है। वे घर पर नियमित साधना करते रहे। पैरालिसिस अटैक के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया। मृत्यु के १५ मिनट पहले उन्होंने उपचार कर रहे डॉक्टर से विपश्यना की चर्चा की और कहा 'मैं साधना करता हूं। आप भी साधना शिविर से लाभ लो। उसके बाद साधना के लिए आंखें बंद कर ली। मैंने भी मंगलभाव से मैत्री दी और वे धीरे-धीरे शांत होते चले गये। मृत्यु पश्चात उनके चेहरे की शांति दर्शनीय थी।"

टिप्पणीः इन सूचनाओं से स्पष्ट होता है कि विपश्यना केवल जीवन जीने की कला ही नहीं सिखाती, बल्कि मृत्यु को शांतिपूर्वक वरण करने की कला भी सिखाती है। धर्म को जीवन में उतारने (धारण करने) और नियमित अभ्यास करने की प्रेरणा मिले तो ही इन्हें प्रकाशित करने का उद्देश्य सार्थक होगा। (सं.)

बालशिविर शिक्षक

१. श्रीमती दिपाली मुखर्जी, कलकत्ता
२. श्रीमती प्रभा बाक्रे, कलकत्ता
३. श्री देवव्रत आर्य, कलकत्ता
४. श्री नारायण कृष्ण दास, मुर्शिदाबाद
५. कु. फाल्गुनी सरकार, २४ परगना
६. श्रीमती रंजना अग्रवाल, नई दिल्ली
७. श्रीमती मंजु मित्तल, नई दिल्ली

दोहे धर्म के

बुद्धरतन सीमारहित, धरमरतन अनसीम।
संघरतन सीमारहित, प्राणी सभी ससीम॥

तीन रतन की शरण में, धरम शरण ही जान।
तीन रतन की वंदना, धरम वंदना जान॥

बुद्ध, धरम का, संघ का, यह सच्चा सम्मान।
जीवन जीऊं धरम का, पाऊं पद निरवाण॥

तीन रतन की शरण में, आत्म-शरण पहचान।
आत्म-शरण ही धरम है, धरम-शरण सुख खान॥

शरण सही है आत्म की, अन्य शरण ना कोय।
आत्म-शरण सद्धर्म शरण, सत्य वचन सुख होय॥

पूजन अर्चन वंदना, तो ही सार्थक होय।
जीवन में जागे धरम, पाप विसर्जित होय॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
• महालक्ष्मी मंदिर लेन, ८ महालक्ष्मी चैंबर्स, २२ वार्डन रोड, मुंबई-४०००२६.
-४९२३५२६, • सनस प्लाजा, शॉप ११-१३, १३०२, सुभाष नगर, पुणे-४११००२.
-४८६१९०, • दिल्ली- २९११९८५,• पटना- ६७१४४२, • वाराणसी- ३५२३३१,
• बैंगलोर- २२१५३८९,• चेन्नई- ४९८२३१५, • कलकत्ता-२४३४८७४
की मंगल कामनाओंसहित

दूहा धरम रा

आस लियां फिरतो रयो, कींकै कींकै लार।
और न कोई तारसी, आपै होसी पार॥

करुणा करी ज बुद्धजी, मारग दियो बताय।
पार उतरस्यां आप ही, चाल्यां पाए पाय॥

पंथ बतायो बुद्धजी, चलणो अपणो काम।
चलतां चलतां आप ही, मिटसी दुक्ख तमाम॥

चलतां चलतां आपही, पंथ सांकड़ो होय।
पड़्यां पराये आसरै, पार न पूगै कोय॥

म्हे ही म्हारै करम स्यूं, होवां सुद्ध असुद्ध।
और कूण सोधै भला, देव, ब्रह्म, या बुद्ध?

सरण सांचली स्वयं की, नहीं परायी कोय।
एक सरण है धरम की, बाकी बिरथा होय॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स
३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ८४०८६, ८४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४५, श्रावण पूर्णिमा, ४ अगस्त, २००१**

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. २५०/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. AR/NSK-46/2001,

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ८४०७६
फैक्स : (०२५५३) ८४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
e-mail: <dhamma@vsnl.com>